International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Volume 01, No. 03, July - September, 2019, pp.145-147

हरबर्ट स्पेन्सर के विज्ञान शिक्षा संबंधी विचार

सीमा वर्मा*
डॉ. सरोजनी उपाध्याय**

प्रस्तावना

हरबर्ट स्पेन्सर शिक्षा के क्षेत्र में प्रकृतिवादी व वैज्ञानिक प्रवृत्ति के पोषक थे। उनकी यह इच्छा था कि समाज में एक ऐसी शिक्षा–प्रणाली जीवन्त की जाए जो कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास पूर्ण रूप से कर सके। विभिन्न देशों में उनके शिक्षा–संबंधी विचारों का अनुमोदन भी हुआ। बालक के सफल व पूर्ण जीवन की तैयारी हेतु उन्होंने विज्ञान विषय को सर्वश्रेष्ठ विषय बताया। पूर्ण जीवन के अन्तर्गत स्पेन्सर आत्मरक्षा, जीविकोपार्जन, वंशवृद्धि एवं शिशु रक्षा, सामाजिक, राजनैतिक कार्य व अवकाश के समय मनोरंजन संबंधी कार्यों को सम्मिलित करते है। वैज्ञानिक विषयों और वैज्ञानिक पद्धति को उनके द्वारा पोषित किया गया। उनके इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप विभिन्न देशों द्वारा शिक्षा के पाठ्यक्रम में विज्ञान विषयों को भी स्थान दिया जाने लगा।

शिक्षा में वैज्ञानिक प्रवृत्ति का प्रारम्भिक रूप 17वीं शताब्दी में यथार्थवादियों द्वारा आरम्भ किया गया। यथार्थवादियों का विश्वास था कि ज्ञान की प्राप्ति इन्द्रियों से होती है। इन्द्रियों के प्रयोग से जिस ज्ञान की प्राप्ति होती है वह स्थायी होता है। इस तरह 18वीं शताब्दी के शुरू में भौतिक विज्ञान तथा जीव–विज्ञान के विकास, प्रकृतिवादी प्रवृत्ति का प्रभाव तथा विभिन्न मानवीय विषयों के बढ़ते प्रभाव ने वैज्ञानिक प्रवृत्तियों को बढ़ावा दिया। इस तरह 19वीं शताब्दी में वैज्ञानिक और विभिन्न क्षेत्रों में औद्योगिक विस्तार ने मानवीय जीवन की दशाओं में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन ला दिए। परिणाम स्वरूप नवीन वैज्ञानिक विषयों का प्रादुर्भाव हुआ। वैज्ञानिक प्रवृत्तियों के समर्थन में विभिन्न विचारकों ने अपने विचार देने प्रारम्भ किए। इनमें हरबर्ट स्पेन्सर का नाम महत्त्वपूर्ण है।

हरबर्ट स्पेन्सर ने अपने शिक्षा–दर्शन में विज्ञान शिक्षा का प्रबल समर्थन किया। हरबर्ट स्पेन्सर का कथन है, ''विज्ञान को सच्चे दिल से चाहने वाला और उसका ज्ञान सम्पादन करने वाला मात्र ज्ञान ही प्राप्त नहीं करता वरन् मानवता को भी समझता है। विज्ञान विषय प्रकृति और विचारों के द्वारा विश्व व्यापक शक्ति का ही प्रदर्शन नहीं करता है यह तो जीवन में अनुशासन और मार्गदर्शन के लिए सर्वोपरि है।''

हरबर्ट स्पेन्सर ने अपने लेख "What Knowledge is of most-Worth" ? (कौन–सा ज्ञान सबसे अधिक उपयोगी है ?) में विज्ञान विषय की महत्ता को उजागर किया। इस लेख में हरबर्ट स्पेन्सर ने विज्ञान विषय की शिक्षा को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के लिए आवश्यक बताया।

हरबर्ट स्पेन्सर अपने इस लेख में शिक्षा के उद्देश्यों और कार्यों की विस्तृत रूप से चर्चा की है। स्पेन्सर ने विभिन्न विषयों के साथ–साथ विज्ञान विषय को महत्त्वपूर्ण बताया। स्पेन्सर अपने इस कथन पर हमेशा अडिग रहे कि परम्परागत रूप शिक्षा का उपयोग उतना नहीं जितना की विज्ञान शिक्षा का है। उनके अनुसार विज्ञान विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना नितान्त आवश्यक है। स्पेन्सर के अनुसार शिक्षा का एक प्रमुख कार्य हमें एक सम्पूर्ण जीवन जीने के लिए तैयार करना है और शिक्षा के द्वारा ही हम अपने जीवन काल में जीवन से जुड़े कार्यों को कैसे सम्पन्न करें, इसके लिए तैयार होते है। एक व्यक्ति द्वारा जीवन में जिन गतिविधियों या कार्यों को सम्पादित किया जाता है उन्हें हरबर्ट स्पेन्सर पाँच भागों में बाँटते है–

* शोधार्थी, शिक्षा विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** शोध निर्देशिका (पूर्व प्राचार्या), श्री स्वरूप गोविन्द पारीक स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

- वे गतिविधियाँ जिनके माध्यम से व्यक्ति प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से स्वयं को सुरक्षित रखता है अर्थात् आत्म–संरक्षण संबंधी कार्य।
- वे गतिविधियाँ जो कि जीवन यापन के लिए आवश्यक है। अप्रत्यक्ष रूप से यह पहली गतिविधि को भी शामिल करता है अर्थात् यह जीवन यापन के लिए जीविकोपार्जन संबंधी कार्यों को बताता है।
- वे गतिविधियाँ जो कि अपनी संतति को संरक्षण देने व उन्हें अनुशासित जीवन जीने के लिए तैयार करने वाली होती है।
- इस क्रम में वे गतिविधियाँ शामिल की गई है जो कि व्यक्ति के सामाजिक और राजनीतिक संबंधों को व्यवस्थित करती है।
- पाँचवें चरण में वे अतिरिक्त गतिविधियाँ सम्मिलित की गई है जो कि जीवन को आरामदायक बनाती है अर्थात् मनोरंजन संबंधी कार्य।

अतः स्पेन्सर के अनुसार एक आदर्श शिक्षा उसी शिक्षा को माना जाएगा जो कि उपरोक्त गतिविधियों के अनुसार मनुष्य के कार्यों को सम्पूर्णता प्रदान करती हो। यहाँ सम्पूर्णता से आशय व्यक्ति अपने मस्तिष्क, शरीर, अर्थात् स्वयं से, परिवार से व समाज से सकारात्मक रूप से संबंधित हो और एक आदर्श नागरिक के रूप में स्वयं को प्रस्तुत करें।

विज्ञान का प्रबल समर्थन करते समय स्पेन्सर ने इस तथ्य को स्पष्ट किया कि विज्ञान विषय की विभिन्न शाखाओं के माध्यम से निर्धारित पाँचों उद्देश्यों या गतिविधियों की पूर्णता की जा सकती है। हरबर्ट स्पेन्सर के अनुसार व्यवहारिक ज्ञान व अन्य सभी तरह के ज्ञान के लिए विज्ञान के ज्ञान की महत्ता और अधिक बढ़ जाती है। यह आवश्यक नहीं की विज्ञान विषय की शिक्षा एक शास्त्रीय विषय के रूप में ही प्राप्त की जाए। इस विषय का सतही ज्ञान भी व्यवहार कुशलता का निर्माण करता है। व्यवहार कुशलता से व्यक्ति में मानसिक शक्ति मजबूत होती है। विज्ञान विषय की शिक्षा से ही व्यक्ति केवल अपने पर्यावरण से संबंधित शब्दों का अर्थ ही नहीं समझता, बल्कि उनसे संबंधित सिद्धान्तों को भी जानता है।

हरबर्ट स्पेन्सर के अनुसार विज्ञान शिक्षा की महत्ता को निम्नलिखित रूप से देखा जा सकता है–

विज्ञान शिक्षा व स्वास्थ्य विज्ञान

विज्ञान विषय की एक शाखा स्वास्थ्य विज्ञान के ज्ञान से शरीर की सुरक्षा से संबंधित तथ्यों की जानकारी प्राप्त है। इसके ज्ञान से बच्चे भावी माता–पिता के रूप में अच्छे पालन–पोषण कर्त्ता बन सकते है।

विज्ञान शिक्षा व स्मरण शक्ति

हरबर्ट स्पेन्सर के अनुसार विज्ञान शिक्षा के माध्यम से स्मरण शक्ति को बढ़ाने में सहायता मिलती है क्योंकि विज्ञान विषयों के नए–नए शब्दों का ज्ञान प्राप्त होता है जिससे शब्द भण्डार में बढ़ोतरी होती है जो की भाषा शिक्षा का भी एक हिस्सा है। भाषा शिक्षा में माना जाता है कि शब्दों को रटने से स्मरण शक्ति बढ़ सकती है लेकिन इसके विपरीत स्पेन्सर का मानना था कि स्मरण शक्ति को बढ़ाने के लिए विज्ञान विषय की शिक्षा उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी की भाषा शिक्षा महत्त्वपूर्ण होती है।

विज्ञान शिक्षा व ललित कलाएँ

हरबर्ट स्पेन्सर ने विभिन्न प्रकार की कलाओं के लिए विज्ञान के ज्ञान को महत्त्वपूर्ण बताया है जैसे संगीतकला, मूर्तिकला, चित्रकला, अर्थात् कला कौशल और कविता के जितने रूप है, उनमें विज्ञान समाहित होती है। जो कलाकार प्रतिमा निर्माण और मूर्ति निर्माण कला को अपनाना चाहते है, उन्हें विज्ञान का ज्ञान होना आवश्यक है। शरीर–विज्ञान के ज्ञान से मूर्ति की सही बनावट व उसके सही वजन का ज्ञान मूर्ति निर्माण को उत्कृष्ट बनाता है। चित्रकला की योग्यता को प्राप्त करने के लिए विज्ञान जानने की बड़ी जरूरत होती है। यह आवश्यक नहीं की चित्रकार को विज्ञान का ज्ञान शास्त्रीय रीति से ही होना चाहिए बल्कि विज्ञान के मूलभूत नियमों से भी चित्रकार चित्र में सही आकार–प्रकार व सही रंगों के प्रयोग के माध्यम से चित्र को उत्कृष्ट रूप

प्रदान कर सकता है। चित्रण कला की प्रगति उस ज्ञान की प्रगति पर निर्भर होती है जिससे यह ज्ञान प्राप्त होता है कि प्राकृतिक व मानवीय चित्रण में किस तरह की बातें दिखाई पड़ती है, उनके क्या परिणाम होते है, परिणामों के आधार पर कलाकृति उन्नत होती चली जाती है। यह सम्पूर्ण प्रक्रिया तभी संभव है जब विज्ञान विषय का ज्ञान हो। इसके अतिरिक्त हरबर्ट स्पेन्सर ने संगीत कला व कविता पाठ के लिए भी विज्ञान की विधाओं को ज्ञान की मनोवृत्तियों से जोड़ा।

विज्ञान शिक्षा, व विवेचना शक्ति

हरबर्ट स्पेन्सर के अनुसार विज्ञान शिक्षा से विचार और विवेचना की शक्ति बढ़ती है। विज्ञान विषयों का अभ्यास करने में मानसिक शक्ति को अधिक काम लेना पड़ता है। इससे विचार और विवेचना शक्ति बढ़ जाती है। यही कारण है कि स्पेन्सर ने अन्य विषयों के साथ विज्ञान को अधिक महत्त्व दिया। अतः विचार शून्यता को समाप्त करने तथा यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि अन्य विषयों के साथ विज्ञान विषय के पारस्परिक संबंध को अच्छी तरह जाना जाए, क्योंकि सभी विषय एक–दूसरे पर अवलम्बित होते है। विज्ञान शास्त्र के माध्यम से शब्दों के अर्थ के साथ–साथ सिद्धान्त निकालने की आदत का निर्माण होता है, जिससे व्यक्ति में विचार व विवेचना शक्ति का निर्माण होता है। अतः विज्ञान शिक्षा के माध्यम से विचार शक्ति में वृद्धि होती है।

विज्ञान शिक्षा व प्राकृतिक नियमों का ज्ञान

हरबर्ट स्पेन्सर के शिक्षा दर्शन में प्राकृतिक नियमों की स्पष्ट झलक दिखाई पड़ती है। स्पेन्सर बालक में प्रकृति के प्रति प्रेम की बढ़ोत्तरी व पर्यावरण में कार्य कारण संबंधी ज्ञान के विकास के लिए विज्ञान शिक्षा को महत्त्वपूर्ण मानते है। विज्ञान शिक्षा के माध्यम से बालक को प्राकृतिक नियमों का ज्ञान प्राप्त होता है।

विज्ञान शिक्षा से कार्य–कारण संबंधी ज्ञान का विकास होता है जिससे व्यक्ति में प्राकृतिक नियमों को समझने की शक्ति का विकास होता है।

निष्कर्ष

हरबर्ट स्पेन्सर एक महान दार्शनिक थे उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में अपने विचार दिए। लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में उनके द्वारा दिए गए विचार महत्त्वपूर्ण है। स्पेन्सर शिक्षा की प्रकृतिवाद धारणा प्रस्तुत करते है। साथ ही शिक्षा में अन्य विषयों के साथ–साथ विज्ञान विषय की शिक्षा की ओर ध्यान आकृष्ट किया, क्योंकि विज्ञान व्यक्ति की जीवन शैली को बहुत अधिक प्रभावित करता है। विज्ञान विषय का ज्ञान जितना बच्चों को दिया जाएगा उनकी जीवन शैली उतनी ही सशक्त होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- Compayre G., (1907), Herbert Spencer and Scientific Education
- Eliot C.W., (1911), Herbert Spencer, Essays on Education and Kindred Subjects. Dutton : New York.
- Spencer Herbert, (1861), Education : Intellectual, Moral and Physical.
- Taylor M.W., (2007), The Philosophy of Herbert Spencer.
- त्यागी, त्यागी, (2008), शिक्षा के दार्शनिक व सामाजिक आधार।
- शर्मा और शर्मा (2009), शिक्षा के दार्शनिक आधार।
- शुक्ला, सी.एस. (2009), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार।
- पाण्डेय, रामशक्ल, (2011), विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री।

❖◆❖